रमेश शर्मा

दोहा

सच्चाई आए नजर, उभरे मन में टीस ।
खबरें अब छापें कहाँ ,ऐसी खबरऩवीस ।।

पत्रकार करता सदा ,...विज्ञापन का काम ।
जनहित की पहचान है,साहित्यिक संग्राम ।।

पत्रकार का फर्ज है, ..जागृत करे समाज ।
उसे देखना चाहिए,कभी न शासन साज ।।

इत देखूंँ परिवार या, उत देखूँ मै देश ।
जीवन के बाजार मे,ऐसा फँसा रमेश ।।

पिछड़ेपन की देश मे,ऐसी चली बयार ।
लगी हुई है होड़ सी , बनने की लाचार ।।

कर लेगें सब ठीक है, गठबंधन स्वीकार ।
किसे कहें पर आपका, बतलाएँ सरदार ।।

बुरे भले के बीच का, जिन्हे नही है भान।
उनकी भी मंशा यही, मै भी बनूँ प्रधान ।।

बढती गई किसान की, दिन पर दिन जब पीर।
मेघों ने अपना स्वंय, ...दिया कलेजा चीर।।

ऐसी कैसी लालसा ,नेताओं की आज ।
चाहे जैसे भी मिले, रहे उन्ही का राज ।।

इच्छाएँ मरती नही,...मर जाता इंसान ।
यही समूचा सत्य है,इसे समझ नादान ।।

जिसके रहते खो गया.,जीवन का अनुराग ।
ऐसी ख्वाहिश का करें,फौरन ही परित्याग ।।

विद्या से बढकर नही, उत्तम और निवेश ।
चाहे जितनी कीजिए, दौलत जमा रमेश ।।

बचकाना हरकत करें,नाजायज व्यवहार ।
लोगों मे उनका रहे,. सदा निम्न किरदार।।

पता नही किस वक्त क्या,दे दें दुष्ट बयान।
काबू मे जिनकी कभी,रहती नही जबान ।।

करते हो निंदा अगर,रहे हमेशा ध्यान ।
होते हैं तुम मान लो,.दीवारों के कान ।।

क्या होंगे उस द्वार के, सोचो तो हालात ।
लौटी हो आकर जहाँ, सजी धजी बारात ।।